संजाण की कहानी

बच्चोंकी कहानियाँ

होरमजदियार दलाल

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारी बात

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे–बडे संत–पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

संपादक : मूलशंकर भट्ट — बच्चों की कहानियां–४

संजाण की कहानी

होरमजदियार दलाल

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

चित्रकार :
मृगांक जोशी

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद–३८० ०१४

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एण्ड कम्पनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली – ११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००० १
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर–४४०००२
खजांची रोड, पटना–८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००१
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाऊस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर–५६०००९
६३१–७, महात्मा गांधी रोड, एर्नाकुलम, कोचीन-६८२०११

संजाण की कहानी

करीब दस हजार वर्ष पहले आर्य-जाति के लोग कई शाखाओं में बंटकर अलग-अलग दिशाओं में चल पड़े। उनमें से एक विरोक नाम की शाखा के कुछ लोग आगे बढ़कर आर्य-यान अर्थात् ईरान में रुक गये और उसी शाखा के कुछ लोग सिंधु-गंगा के तट पर आ बसे। इस प्रकार हिन्द के आर्य और ईरानी पहले साथ ही रहते थे। इसलिए इनमें कई बातों में समानता पायी जाती है। इनकी भाषा और धर्म दोनों में काफी समानता है। मगर बाद में जब दोनों जातियां अलग हो गयीं तो दोनों का विकास अपने-अपने ढंग से हुआ।

पुराने ईरान के पश्चिमी भाग को पार्स कहते हैं। इसी प्रदेश के ईरानी लोग जब अपना धर्म और साहित्य लेकर भारत में आये और यहीं बसे, तब वे पारसी कहलाये। वे क्यों और कैसे भारत आये, इसका इतिहास बड़ा ही दिलचस्प है।

लगभग बारह सौ साल तक पारसियों ने ईरान में राज्य किया। उनका इतिहास पांच राजवंशों में बंटा है। पहला वंश पेशदादियन और अंतिम सासानियन कहलाता है। शासन के इस लंबे काल में दो-तीन बार उनके राज्यों में फूट पड़ी, मगर उन्होंने अपनी संस्कृति को फिर भी बचाये-बनाये रखा।

ई. स. पूर्व ५४९ में आरम्भ हुए फारसी इतिहास का ई. स. ६३९ में अंत हुआ। इस दरम्यान जमशेद,

गुस्तास्प, महान सायरस, दरायूस और उसका पुत्र झरकिसस, नौशेरवां खुशरू पहला और दूसरा आदि कई महान योद्धा और न्यायप्रिय राजाओं ने राज्य किया था ।

हर वर्ष २१ मार्च को जमशेदी नवरोज नामक त्योहार पारसी लोग मनाते हैं । इसका आरंभ ईरान के बादशाह जमशेद ने किया था । वास्तव में यह वसंत ऋतु का उत्सव है । प्राकृतिक खूबसूरती के साथ-साथ त्योहार में लोगों का मन भी झूम उठता है । किसानों की फसल अच्छी होती है और अगले साल और भी अच्छी फसल की आशा से उनका मन नाच उठता है । चारों ओर खुशी छा जाती है । ईरान में इस त्योहार को तब खूब धूम-धाम से मनाया जाता था ।

बादशाह जमशेद बड़े ज्ञानी एवं गुणी थे । उनके समय में देश में खुशहाली थी । कहा जाता है कि जमशेद के पास एक रत्नजड़ित प्याला था । उस चमत्कारिक प्याले में जब वे देखते थे, तब उन्हें सारी दुनिया के नजारे दिखायी देते थे । उसी प्याले में झांककर वे भविष्य भी देखते थे । इसी कारण वे बड़े नामी ज्योतिषी माने जाते थे ।

राजा नौशेरवां भी बड़े प्रसिद्ध राजा रहे । वे बहुत न्यायप्रिय थे । न्यायप्रियता के कारण ही वे नौशेरवान-ए-आदिल के नाम से प्रसिद्ध हुए । भारत के मुगल बादशाह जहांगीर के समान नौशेरवां भी आम जनता को न्याय देने के लिए तत्पर रहते थे । अमीर हो या गरीब, किसी प्रकार का भेद-भाव न्याय में उन्हें स्वीकार नहीं था । इस उदार राजा के राज्य में न्याय का पलड़ा हमेशा बराबर रहता था ।

ईरान का राजा सायरस अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध है । इन्होंने अपने तीस वर्ष के राज्यकाल के दौरान अपने पुत्र के साथ मिलकर अफ्रीका, मिस्र आदि कई देशों को जीत लिया था।

राजा सायरस केवल शूरवीर ही नहीं थे, उदार भी थे । वे राजनीति में बड़े निपुण थे । दुश्मनों के प्रति भी वे तहजीब से पेश आते थे । सायरस ने यहूदियों को हराया, पर

हारे हुए यहूदियों को भी सायरस ने मुक्त करके जेरूसलम लौट जाने दिया । इतना ही नहीं, उनके पूजा-स्थल, जो युद्ध के कारण बहुत कुछ नष्ट हो गये थे, सायरस ने ठीक करवा दिये । ईसाइयों के धर्मग्रंथ बाइबल में भी इस घटना का उल्लेख मिलता है । जीते हुए राज्यों के धर्म में सायरस कभी दखल नहीं करते थे । दूसरे धर्मों के प्रति उनके दिल में इज्जत थी । एक सच्चे वीर की भांति वे क्रूर नहीं, क्षमाशील थे ।

राजा खुशरू दूसरे के बाद सासानियन वंश का अंत निकट आ गया । ईरान की गद्दी पर बाद में आये राजाओं में दूसरे धर्मों के प्रति सम्मान की कमी पायी जाने लगी । आपस में कलह होने लगा । वैर और कुसंग के कारण अंदरूनी झगड़े बहुत बढ़ गये । राज्य की नींव कमजोर होती गयी । हमेशा से यही होता आया है ।

ईर्ष्या और आपस के झगड़ों से अक्सर परिवारों एवं देशों का पतन होता है । इतिहास इसका गवाह है । राजा दशरथ के परिवार में रामचंद्र को वनवास मिला; कौरव-पाण्डव, जो भाई थे, उनके बीच भी महाभारत की लड़ाई हुई । अरब आक्रमण के सामने नेहावंद के युद्ध में आखिर ईरानी साम्राज्य का भी अंत हुआ ।

अरबों ने ईरानियों के "आतश बहेराम" (मंदिर) जला डाले । पारसी धर्म में आग की बड़ी ही महत्त्वपूर्ण जगह है । जरथुस्त्र धर्म छोड़कर इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए उन पर दबाव डाला गया । किसी की भी सलामती न रही । ऐसी हालत में ईरान के पारसियों के सामने एक ही बात थी कि किसी भी हालत में उन्हें अपने धर्म की रक्षा करनी चाहिए । इसलिए अपनी पवित्र अग्नि को लेकर, सबकुछ त्यागकर भी किसी सुरक्षित जगह पर निकल जाया जाये, यही एक रास्ता उनकी नजरों में बचा था । वे किसी भी हालत में अपने पैगम्बर जरथुस्त्र द्वारा बनाये धर्म को छोड़ना नहीं चाहते थे । आखिर खुरासान की पहाड़ियों में जाकर उन्होंने डेरा डाला । लगभग सौ साल तक इन पहाड़ियों के आसरे वे रहे ।

धीरे-धीरे वहां भी अरब पहुंचे । पारसियों ने उन पहाड़ियों को अंतिम सलामी दी और होरमज नामक समुद्र के किनारे बसे शहर में आ गये । वहां भी उन्हें अपनी सलामती नजर नहीं आयी ।

अपने देश ईरान को अंतिम प्रणाम कर वे निकल पड़े और समुद्र के जरिये भारत पहुंचे ।

छठी शताब्दी से ईरान का भारत के साथ व्यापार-व्यवहार था, इसलिए वे इस देश से परिचित तो थे ही । नौशेरवां और खुशरू दूसरे के समय में तो भारत के साथ व्यापारी समझौते भी हुए थे। हिन्द में तब चालुक्य वंश का राज्य था । उपरोक्त करारों के अनुसार पुलकेसिन दूसरे ने ईरान के दरबार में अपना प्रतिनिधि भेजा था। ईरान का प्रतिनिधि भारत के दरबार में स्थायी रूप से रहता था । अजंता की एक नंबर की गुफा की कलाकृतियों में इस प्रसंग की जानकारी मिलती है । उसी गुफा की छत में खुशरू और उसकी पत्नी शिरीन का एक चित्र दिखायी देता है ।

बहुतेरी कठिनाइयों का सामना करते हुए, कई महीनों के लंबे प्रवास के बाद पारसियों ने भारत के दीव नामक बंदरगाह पर अपने जहाजों को ठहराया । उन्नीस वर्ष वे वहां रह सके । उस वक्त पुर्तगालियों की सत्ता दीव में थी । पारसी धर्म फिर से खतरे में पड़ा । पुर्तगाली सब ईसाई थे । वे इन नवागंतुक पारसियों पर ईसाई धर्म लादना चाहते थे । जर-थुस्त्री पारसी इसके लिए बिलकुल तैयार नहीं थे । धर्म की रक्षा के लिए ही तो उन्होंने अपना ईरान देश छोड़ा था । इसी कारण उन्हें अब दीव भी छोड़ना पड़ा ।

अपने थोड़े से माल-असबाब को छोटे-छोटे जहाजों में भरकर, बाल-बच्चों के साथ वे समंदर में निकल तो पड़े, मगर उन्हें पता नहीं था कि वे किस ओर जा रहे हैं । कुछ भी निश्चित नहीं था । उनके पास नक्शे भी नहीं थे ।

हवा के झोंकों पर उनकी नावें चलने लगीं । समंदर में सख्त तूफान उठा । छोटे-छोटे जहाजों को तूफानी

समुद्र की भयानक लहरें इधर-से-उधर फेंक देती थीं । वे बच भी पायेंगे या नहीं, भरोसा नहीं था । उन्हें सिर्फ खुदा का आसरा रह गया था । उन्हें विश्वास था कि खुदा उनकी मदद जरूर करेंगे ।

उन्होंने बंदगी शुरू की और शपथ ली कि जहां भी सही-सलामत वे पहुंचेंगे, वहीं वे आतश-बहेराम (अग्निघर) की स्थापना करेंगे । आखिर समुद्री तूफान शांत हुआ और सबने ईश्वर का उपकार माना । उनकी जान-में-जान आयी ।

जहाजों ने जहां लंगर डाले, तो पता चला कि वह संजाण का बंदरगाह था । बंबई-अहमदाबाद के बीच, सूरत के निकट संजाण नामक शहर है । ट्रेन से संजाण का कीर्तिस्तंभ आज भी दिखायी देता है ।

पारसियों ने संजाण की धरती पर कदम रखे । वहां के लोग इन विदेशियों को देखकर सोच-विचार में पड़ गये कि न जाने ये कौन लोग यहां आ गये हैं । सशस्त्र पुरुष ऊंचे और बलिष्ठ दिखायी देते थे । आंखों में एक तेज था और उनकी औरतें ? ऐसी गोरी-चिट्टी औरतें तो कभी किसी ने नहीं देखी थीं । उनका पहनावा भी एकदम नये ढंग का था । संजाण की प्रजा ने नये आगंतुकों के बारे में राजा को तुरंत संदेश भेजा ।

उस समय संजाण में जदी राजा राज्य करता था । पहले तो वह उलझन में पड़ गया । फिर उसने कुछ सोचा ।

उसने परदेसियों के आने का मतलब जानने के लिए दूध से भरा एक घड़ा उनकी छावनी में पहुंचाया । उसका मतलब था कि दूध के समान ही नेक इरादे यदि उन परदेसियों के होंगे, तो वे प्रेम से दूध स्वीकार करेंगे । साफ नीयतवालों को राज्य में बसाने में राजा को कोई आपत्ति नहीं थी । हथियारबंद परदेसियों से सावधान रहना भी जरूरी था । राजा चाहता था कि उस छोटे से राज्य की शांति भंग न हो ।

पारसियों में भी कुछ ज्ञानी लोग थे । उनके वयोवृद्ध धर्मगुरु बड़े अनुभवी थे । राजा का संदेश समझने में उन्हें देर न लगी । उन्होंने अपनी सोने की अंगूठी उस दूध के घड़े में डाल

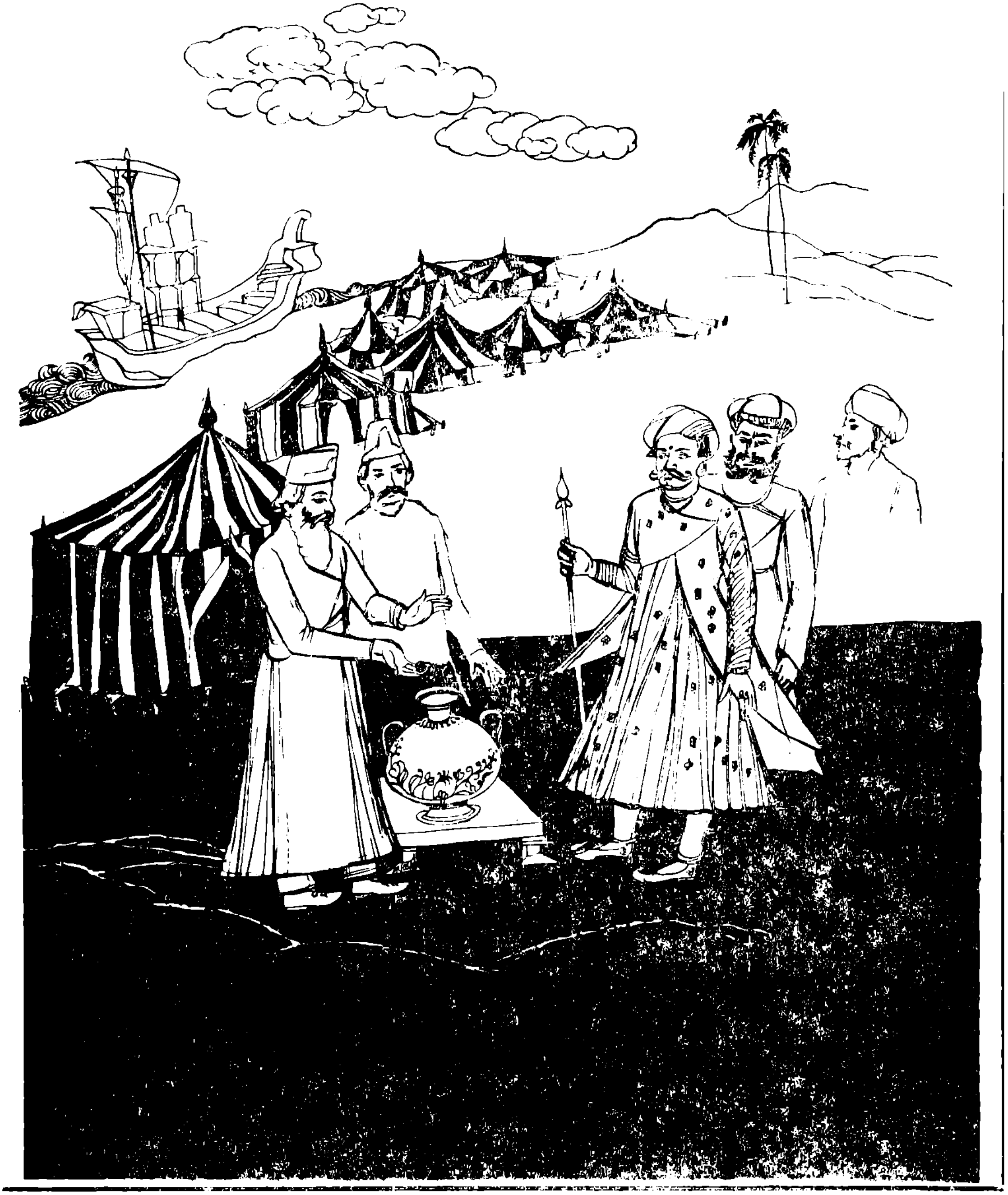

दी और घड़ा वापस भेज दिया। राजा भी इस जवाब का मतलब समझ गया। वे परदेशी दूध के समान निर्मल, छल-कपटरहित राज्य में शांति से नीचे बैठी अंगूठी के समान रहना चाहते हैं। सोने की अंगूठी दूध में डालने का मतलब यह था कि वे उनसे राज्य छीनने नहीं आये हैं बल्कि जो हो सके, वह चाहे जितना भी कीमती हो, देना ही चाहेंगे। वे उनसे हिल-मिलकर तो रहेंगे, मगर साथ ही अपना अनोखा अस्तित्व, अपना प्राण-प्रिय धर्म बनाये भी रखेंगे। वे उसमें किसी की दखलबाजी नहीं चाहते हैं।

राजा ने परदेसियों को अपने दरबार में पधारने का आमंत्रण भेजा। राज्य के नागरिकों को भी आने की सूचना दी गयी।

निश्चित दिन जरी के चमचमाते वस्त्रों में राजा दरबार में सिंहासन पर बिराजे। माथे पर रेशमी साफा बंधा था। पैरों में कसीदाकारी से सुशोभित मोजड़ी थी। सफेद कपड़े पहने अंगरक्षकों के हाथों में भाले चमक रहे थे। राजा कैसे इन विदेशियों का स्वागत करेंगे, प्रजाजन इस बात की प्रतीक्षा बड़ी आतुरता से कर रहे थे।

राजा के संकेत पर पारसियों के धर्मगुरू, हाथ में आफरगान (अग्नि-पात्र) लेकर राजा के सामने उपस्थित हुए। धूप-चंदन की सुगंध से दरबार महक उठा। अनेक संकटों के बीच भी वे लोग उस पात्र में सुरक्षित अग्नि को ईरान से यहां तक ले आये थे। पैगम्बर जरथुस्त्र की जलायी वह अग्नि आजतक उन्होंने प्रज्वलित रखी थी।

राजा ने पूछा, "आप इस देश की धरती पर कहां से आये हैं? किस इरादे से आये हैं? आपको क्या चाहिए?"

धर्मगुरु ने बड़ी नम्रता और विनय के साथ जवाब दिया, "राजा, हमें परायी धरती की जरूरत नहीं है। हम केवल अपने धर्म की रक्षा के लिए यहां तक आये हैं। हम चाहते हैं कि अपने धर्म का पालन करते हुए, बिना किसी के विरोध या दखल के, हम यहां शांति से रहें।"

राजा ने पूछा, "आप किस प्रकार इस राज्य के मददगार हो सकेंगे?"

धर्मगुरु ने जवाब दिया, "राजा, हमारे लोग आपकी प्रजा के साथ हिल-मिलकर बसेंगे। इस धरती पर संकट आने पर बिना देर किए, शत्रुओं का सामना करने में पीछे नहीं हटेंगे। इस धरती की जीत हमारी जीत और इसकी हार हमारी हार होगी। धर्मरक्षा के सिवा यहां आने का कोई और मकसद हमारा नहीं है।"

"आपका धर्म क्या है?" राजा ने पूछा।

पारसी धर्मगुरु ने सोलह संस्कृत श्लोकों द्वारा जरथुस्त्र धर्म के मूल सिद्धांत राजा को समझाये। उनके मूल सिद्धांत हैं: मनशनी, गवशनी और कुनशनी–अच्छे विचार, मीठी वाणी और अच्छे कर्म।

धर्मगुरू के जवाब से प्रभावित हो राजा ने पारसियों को संजाण की भूमि पर बसने की इजाजत दे दी। इतना ही नहीं, निवास के लिए खेती-बाड़ी के लायक जमीन भी दी, लेकिन राजा ने उनके सामने कुछ शर्तें भी रखीं। सबसे पहली शर्त थी, पारसियों को अपने हथियार नीचे रख देने होंगे। सबने उसी वक्त सारे हथियार राजा को सौंप दिए। दूसरी शर्त थी, वक्त पड़ने पर राज्य की रक्षा करने को तैयार रहना होगा। राजा ने यह भी कहा कि यदि हिल-मिलकर रहना ही है, तो यहां के लोगों की भाषा एवं इनका पहनावा भी आप अपनाएं, ताकि आपके लिए हमारे मन से परायेपन की भावना दूर हो सके।

सारी शर्तों के लिए पारसी वचन-बद्ध हुए।

करीब सात सौ वर्ष उन्होंने संजाण में सुख-शांति से बिताये।

एक बार फिर आपत्ति आ पड़ी। संजाण में अभी तक जदी राजा के वंशज राज्य करते थे। गुजरात में सुलतान मुहम्मद बेगड़ा का राज्य था। संजाण की सुख-समृद्धि के बारे में उसने सुना तो अलफ खान नामक सरदार की सरदारी में संजाण पर आक्रमण करने का हुक्म दिया। अलफ

खान ने संजाण पर अचानक धावा बोल दिया ।

सात सदियों से सुख-शांति से सुरक्षित संजाण पर संकट के काले, तूफानी बादल घिर गये । राजा ने अपनी प्रजा को तैयार किया । छोटे से राज्य की सेना भी छोटी ही थी। सामना कैसे किया जाये ? मुहम्मद बेगड़ा की सेना काफी बड़ी थी ।

राजा ने पारसी प्रजाजनों के सामने भी अपनी चिंता प्रकट की । उन्हें उनके पूर्वजों के दिए वचनों की याद दिलायी । जिस राज्य ने उनके धर्म के लिए इतनी सुरक्षा दी, उसके प्रति बदला चुकाना फर्ज था । पारसियों ने सोचा, वचन-पालन का समय अब आ गया है । उन्होंने राजा को अपनी ओर से हर तरह की मदद का भरोसा दिया । संजाण के प्रति अपना कर्ज चुकाने का वक्त आ गया था, और फिर अपने धर्म की रक्षा का भी प्रश्न था ही । इसलिए पारसियों ने भी हथियार संभाल लिए । शताब्दियों से शांत पड़ा उनका खून फिर खौल उठा । विरासत में मिली शूरवीरता की धार उन्होंने तेज कर डाली ।

अलफ खान की सरदारी में बेगड़ा की सेना संजाण की सरहद पर पहुंच चुकी थी । संजाण की सेना भी सामने तैयार थी ।

लड़ाई शुरू हुई ।

तलवार-भाले ऐसे चमक उठे जैसे हजारों बिजलियां एक साथ कड़क उठी हों । सूर्य के प्रकाश में लग रहा रहा था जैसे चांदी की वर्षा हो रही हो । शस्त्रों की कर्कश आवाज, पशुओं की भयानक चिंघाड़, घायलों की दर्दनाक चित्कार से वातावरण भयानक बन रहा था । तीरों की तो मानो वर्षा हो रही थी । मुर्दों पर मुर्दे गिर रहे थे । धरती पर खून के बड़े-बड़े तालाब बन गये थे ।

तड़पते सैनिक जैसे मौत से भी जंग खेल रहे थे । पलभर का भी समय मिल जाता तो टूटे हाथ-पैरों से मरते-मरते भी दुश्मनों पर वार करना वे न चूकते थे । आसमान तीरों और उड़ती धूल से भर गया था । भीषण लड़ाई हुई । राजा की सेना को बहुत नुकसान हुआ ।

पारसी वीर हिम्मत नहीं हारे । उनके सरदार का नाम अर्दशिर था । उसने वीरों में जोश जगाया । अपनी सेना से कहा, "वीरो, मातृभूमि की रक्षा करना हर जवान का फर्ज है । इसी भूमि का लहू हमारी रगों में बह रहा है । लाखों चींटियों की सेना देखकर एक शेर नहीं डरता है । उसका एक पंजा ही उन्हें खत्म करने के लिए काफी है । आगे बढ़ो, जान की परवाह नहीं करो । आतश के पुजारियो, आग की भभकती ज्वाला बन जाओ ।"

जोश दिलाता हुआ अर्दशिर दूने जोश के साथ दुश्मनों पर टूट पड़ा । लगातार तीन दिनों तक लड़ाई हुई । आखिर अलफ खान को जान बचाकर भागते देख दुश्मन की सेना भी भागने लगी । राजा की जीत हुई ।

संजाण की प्रजा इस जीत के कारण खुशी से पागल हो उठी । पारसियों की शूर-वीरता से सब प्रभावित हुए । उन्होंने मातृभूमि की रक्षा की थी । राजा ने अर्दशिर का स्वागत हीरे-मोती से किया, और उन्हें एक रत्नजड़ित तलवार भेंट की ।

मगर अभी दुश्मन ठंडे नहीं हुए थे ।

अलफ खान अपना पिटा हुआ चेहरा सुलतान को दिखाना नहीं चाहता था । सुलतान उसे देखना भी नहीं चाहते थे । अलफ खान ने फिर सेना तैयार की । इस बार बहुत से बहादुर सैनिकों को इकट्ठा किया । राजा की सेना के साथ मिलकर लड़नेवाले ईरानियों की ताकत का उसे अंदाज हो चुका था । इसलिए बेहद तैयारी के साथ वह फिर से संजाण की भूमि पर टूट पड़ा ।

संजाण की प्रजा अभी जीत का आनंद लूट रही थी । उसे खयाल ही न था कि दुश्मन इतनी जल्दी आ धमकेगा । वे निश्चित थे । फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी । हारा हुआ दुश्मन दुगने जोश के साथ आया था । तब भी संजाण का सामना करना उन्हें भारी पड़ गया ।

इस बार भी राजा की सेना की सरदारी अर्दशिर ने संभाली थी । अच्छे-लेकिन अच्छे सैनिक तो मारे गये, ईश्वर में भरोसा और अपने आत्म-

विश्वास पर अर्दशिर आगे बढ़ा । सीधे शत्रु की सेना में घुसकर उन्हें चुनौती देकर पूछने लगा, "कौन है तुम्हारा सरदार ?"

अलफ खान का एक बहादुर सैनिक आगे आकर बोला, "क्यों, क्या कहना है तुझे ? ताकत है तो मैदान में आ जा । मैं तेरा सामना करने के लिए तैयार हूं ।"

"ऐ नौजवान, इतना गर्व न कर । मेरा एक ही वार तुझे जमीनदोस्त कर देगा," अर्दशिर ने जवाब दिया ।

दोनों वीरों का सामना हुआ । म्यान से तलवारें उछल पड़ीं । दोनों का मुकाबला बराबर का था । तलवारबाजी के दाव-पेंच दोनों जानते थे । मगर अर्दशिर अनुभवी था । उसका वार खाली नहीं जा रहा था । अंत में उसका एक वार ऐसा बैठा कि दुश्मन का जवान धरती पर लोट गया । उसका सिर कटकर दूर जा गिरा । उसका घोड़ा चिल्लाता हुआ इधर-उधर भागने लगा ।

अपने बहादुर दोस्त का ऐसा करुण अंत देखकर अलफ खान अल्लाहो-अकबर चिल्लाता राजा की सेना पर टूट पड़ा ।

फिर से भीषण लड़ाई ठन गयी । चित्कारों और हथियारों की कर्कश आवाज से आसमान भर गया । अलफ खान इस बार पागलों की भांति टूट पड़ा था । आंखें बन्द करके वह राजा के सैनिकों पर वार किए जा रहा था । उसका घोड़ा इधर-से-उधर, उधर-से-इधर बिजली की तरह दौड़ता था ।

एक तीर अर्दशिर के सीने को चीरता हुआ निकल गया । राजा के सैनिकों ने यह देखा और उनके होश उड़ गये । बिना सरदार के सेना का जोश ठंडा पड़ गया । वे इधर-उधर भागने लगे । सारी सेना में बदइन्तजामी फैल गयी । अलफ खान ने यह देखा और इस हालत का फायदा उठाया । नतीजा यह हुआ कि संजाण की हार हुई । राजा की मृत्यु हुई । अलफ खान की जीत हुई । जरथुस्त्री सैनिकों की भी बड़े पैमाने पर हानि हुई ।

जितने पारसी इस खूनी जंग में बचे थे, उन्हें फिर से धर्म की रक्षा के लिए संजाण छोड़ना पड़ा । ●

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी । इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके । वह भाषा है हिन्दुस्तानी ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है । हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी ।

बच्चों की कहानियां

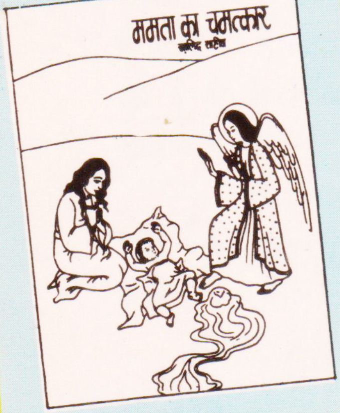

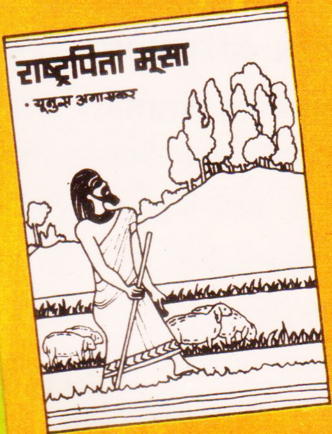

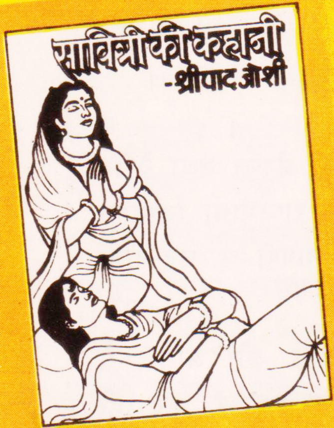

एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली - ११० ०५५